B.A. (Hons) Part III
Philosophy Paper VI

Topic: राजनीतिशास्त्र और राजनीतिदर्शन में अन्तर।

Dr. Sachidanand Prasad
Deptt. of Philosophy
R.R.S. College Mokama.

वैज्ञानिक दृष्टि से समाज के अध्ययन को समाजशास्त्र कहा जाता है और दार्शनिक दृष्टि से अध्ययन करने को समाज दर्शन कहा जाता है। ठीक इसी प्रकार राजनीति का भी दो दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है — वैज्ञानिक दृष्टि से या दार्शनिक दृष्टि से। इनमें एक को राजनीति शास्त्र और दूसरे को राजनीति दर्शन कहा जाता है। राजनीतिशास्त्र मनुष्य के राजनीतिक जीवन और उससे सम्बद्ध समूहों और संस्थाओं का अध्ययन करता है। गेटेल का कहना है कि राजनीतिशास्त्र राज्य का विज्ञान है। यह विज्ञान राजनीतिक समितियों के संगठन, सरकार, कानून की व्यवस्था तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन करता है। गार्नर ने कहा है कि राजनीतिशास्त्र राज्य की उत्पत्ति, उसके स्वरूप, राजनीतिक संगठनों के स्वरूप, उनका

(2)

इतिहास तथा ~~इसके~~ उनके रूपों और राजनीतिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है। लेकिन कभी कभी राजनीतिक सिद्धान्त और राजनीति दर्शन को एक मान लिया जाता है जो भ्रामक है। इसका कारण यह है कि राजनीतिक सिद्धान्त और राजनीति दर्शन में ठीक वैसा ही अन्तर है जैसा सामाजिक सिद्धान्त और समाज दर्शन में है। राजनीतिक तथ्यों की व्याख्या के लिए राजनीतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता है लेकिन यह कार्य राजनीति शास्त्र के क्षेत्र में आता है। राजनीतिशास्त्री अन्य प्राकृतिक वैज्ञानिकों की तरह तथ्यों की व्याख्या करने का प्रयत्न करते हैं। अर्थात् उसका लक्ष्य है- तथ्यों की व्याख्या करना। अन्य प्राकृतिक सिद्धान्तों की तरह उसके सिद्धान्तों का परीक्षण के द्वारा संशोधन सम्भव है। अनुभव के द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार पर सामान्यीकरण और उनका परीक्षण राजनीतिशास्त्र में होता है। राजनीति दर्शन भी सैद्धान्तिक है लेकिन राजनीति शास्त्र से भिन्न है। इसमें राज्य के विभिन्न पहलुओं का दार्शनिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। इसप्रकार राजनीति दर्शन राजनीतिक जीवन का अर्थ तथा उद्देश्य से सम्बन्धित है। यह राज्य के लक्ष्य, आदर्श तथा मूल्यों का अध्ययन है। अपने समीक्षात्मक तथा रचनात्मक दोनों पक्षों के लिए राजनीतिदर्शन को राजनीतिक तथ्यों की आवश्यकता होती है।

REDMI NOTE 9
AI QUAD CAMERA